रात्रि क्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 8/2/68

बनारस का समाचार बच्चों ने सुना। विद्युत मंडली के आये। वहाँ शायद दक्षिणा का रिवाज़ है उन्हों का। उनमें एक भी समझ जाये तो कुछ वार्तालाप चले। एक भी समझ जाये तो सब वाद–विवाद करने लग पड़ें। शास्त्रावाद को करते हैं वह भी देखने में मज़ा है; परंतु इन बातों में डिबेट कर न सकेंगे। यह तो है ही सत्य बात। फिर भी विद्युत मंडली के आ तो गए ना। वास्तव में शास्त्रावाद करना इसमें दरकार नहीं। मूल बात है याद की। सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को समझना इसको ही समझ कही जाती है। चक्रवर्ती राजा बनना है। इस चक्र को सिर्फ समझना है। इसका गायन है सेकेंड में जीवनमुक्ति। तुम बच्चों को वंडर लगता है आधा कल्प (भक्ति) चलती है। ज्ञान का रिंचक भी नहीं। ज्ञान है बाप को बाप द्वारा जानना है। यह बात कितना अनकॉमन है। इसलिए कोटों में कोऊ ही निकलते हैं। टीचर थोड़े ही ऐसे कहेंगे। यह तो कहते हैं मैं ही बाप,टीचर,गुरू हूँ। तो मनुष्य सुनकर वंडर खावे। भारत को मदर कंट्री कहते हैं; क्योंकि अम्बा का नाम बहुत बाला है। अम्बा के मेले आदि बहुत लगते हैं। अम्बा मीठा अक्षर है। अम्बा पालना करती है। छोटे बच्चे भी माँ को प्यार करते हैं। वह खिलाती है, पिलाती है, सम्भाल करती है। अब अम्बा का बाबा भी चाहिए ना या पति चाहिए। पति तो है ना। बच्चे भी हैं एडॉप्टेड। यह नई बात है। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर एडॉप्शन करते होंगे। बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। मेला लगता है, पूजा होती है; क्योंकि तुम बच्चे सर्विस करते हो। जितने को मम्मा ने पढ़ाया होगा उतने और कोई ने नहीं पढ़ाया होगा। मम्मा तो बहुत जगह जाती थी। उनका नामाचार ज़रूर है। मेला लगता है। अभी तुम बच्चे समझते हो गीता के भगवान ने जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना की थी वह ज़रा भी किसको पता नहीं है। अभी तुम युक्ति से क्लीयर लिखते भी हो। चित्र पर समझाना सहज होता है। छोटे बच्चे भी चित्र पर ही समझते हैं। अभी तुम जाते हो नई दुनियां में। बाप ने आकर रचना के आदि,मध्य,अंत की नॉलेज दी है। बाप के घर का भी पता पड़ा है। बाप से भी लव है, घर से भी। बाप ही आकर ज्ञान सुनाते हैं। द्वापर से तो भक्ति ही चलती आई है। ज्ञान तुमको अभी मिलता है। पढ़ाई से ही कमाई होती है। तो बहुत खुशी होती है। तुम हो साधारण। दुनियां को पता नहीं है बाप आकर नॉलेज सुनाते हैं। बाप आकर सब नई बात बच्चों को सुनाते हैं। बेहद के पुरानी दुनियां वैराग्य आ जाता है। वह रात, वह दिन। बाप को और घर को याद करना है। घर तो जाकर पहुँचेंगे ना। पतित–पावन बाप ही है इसलिए उनको याद करते हैं। यह तो समझते हो घर तो सबको जाना ही है। बाप सभी को कहेंगे ना– बच्चे, मैं मुक्ति–जीवनमुक्ति का वर्सा देने आया हूँ। फिर भूल क्यों जाते हो? बुद्धि से समझते हो बात यथार्थ है। ऐसा न हो माया के विघ्न आ जायें। तुम्हारा बेहद का बाप हूँ ना। राजयोग सिखलाने आया हूँ। तो क्या श्रीमत पर न चलेंगे? फिर तो बहुत घाटा पड़ जावेगा। तुम बच्चे समझते हो बाबा का हाथ छोड़ दिया तो कमाई में घाटा पड़ जावेगा। यह है बेहद का घाटा। अगर श्रीमत पर न चलेंगे तो बेहद का घाटा पड़ जावेगा। वह है हद के फायदा और घाटा। ओम।